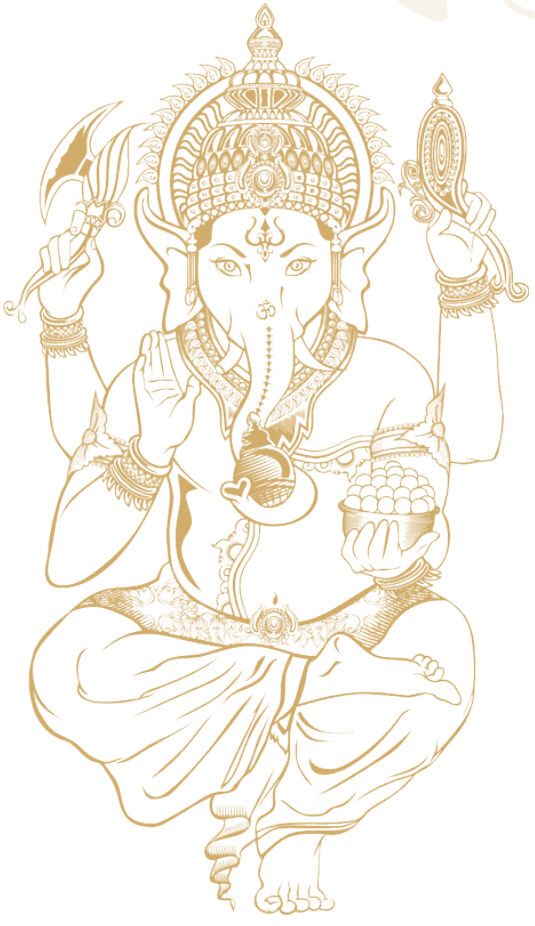

Simaran

04 Jun 2002

08:45 AM

Shajapur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121507201**

तिथि 04/06/2002 **समय** 08:45:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Shajapur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:53:10
अक्षांश 23:27:00 उत्तर **रेखांश** 76:21:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:24:36 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	01:10:00 घं
वेलान्तर	00:01:46 घं
सूर्योदय	05:37:51 घं
सूर्यास्त	19:08:02 घं
चैत्रादि संवत	2059
शक संवत	1924
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	9
नक्षत्र	पू०भाद्रपद
योग	प्रीति
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दी-दीप्ति
पाया(रा.-न.)	रजत-लौह
होरा	बुध
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

गुरु 1वर्ष 9मा 8दि

बुध

14/03/2023
13/03/2040

बुध	09/08/2025
केतु	06/08/2026
शुक्र	06/06/2029
सूर्य	13/04/2030
चन्द्र	12/09/2031
मंगल	08/09/2032
राहु	29/03/2035
गुरु	04/07/2037
शनि	13/03/2040

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 5मा 9दि

संकटा

12/11/2020
12/11/2028

संकटा	24/08/2022
मंगला	13/11/2022
पिंगला	24/04/2023
धान्या	24/12/2023
भ्रामरी	12/11/2024
भद्रिका	23/12/2025
उल्का	24/04/2027
सिद्धा	12/11/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:17:32	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	---	0:00			
सूर्य			19:27:30	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि	1.64	मातृ	पितृ	वध
चंद्र			01:51:18	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.12	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			10:29:00	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	शत्रु राशि	1.27	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध	व	अ	08:11:09	वृष	कृतिका	4	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि	1.30	ज्ञाति	ज्ञाति	साधक
गुरु			23:19:21	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.23	भ्रातृ	धन	जन्म
शुक्र			23:29:18	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	शनि	मित्र राशि	1.21	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि		अ	23:52:31	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	मंगल	मित्र राशि	0.82	आत्मा	आयु	मित्र
राहु	व		24:18:32	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		24:18:32	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	मित्र राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

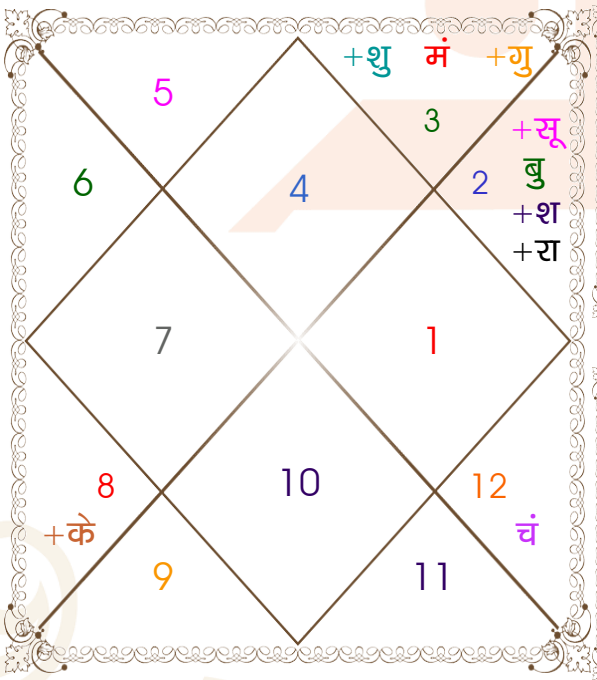

चन्द्र कुंडली

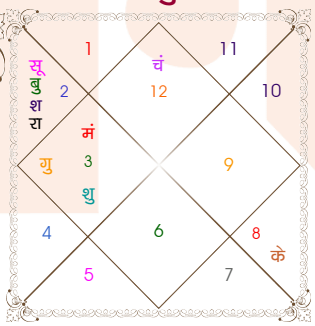

नवमांश कुंडली

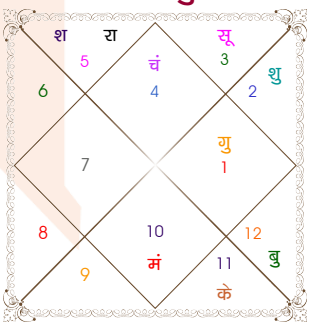

सर्वाष्टकवर्ग

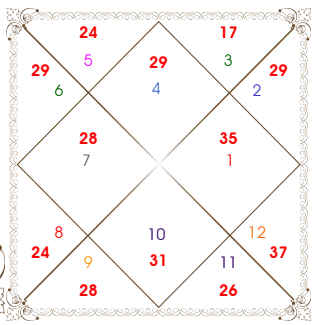

दशमांश कुंडली

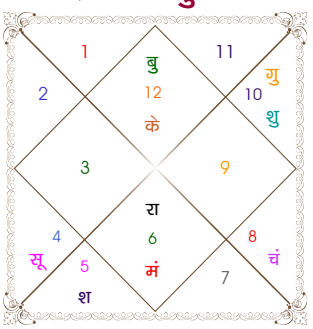

PT. Vishwas Dubey
HATOD DIST INDORE MP
9977779700

नक्षत्रफल

आप पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हें। अतः आपकी जन्म राशि मीन तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि सिंह, वर्ण विप्र, गण मनुष्य, वर्ग सर्प तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दि" या "दी" अक्षर से होगा यथा- दिव्या, दीप्ति आदि।

आप एक संयमशील महिला होंगी तथा अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रख कर संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही नाना प्रकार के कार्यों को करने तथा कलाओं को सम्पन्न करने में भी आप निपुण रहेंगी। इससे आप समाज में आदरणीया रहेंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी एवं वे भी आपसे हमेशा भयभीत रहेंगे तथा आपका विरोध करने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे इसके साथ ही आपकी बुद्धि तीक्ष्ण रहेगी एवं आपके समस्त कार्य बुद्धिमता पूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे जिससे आपको जीवन में सुख एवं प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

आप के पति पूर्ण रूप से आपके वश में रहेंगे तथा सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। इस विषय में स्वतंत्र निर्णय लेने में वे प्रायः असमर्थ ही रहेंगे। आप धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी एवं एक धनवान महिला के रूप में ख्याति अर्जित करेंगी। साथ ही इस धन का जीवन में सुखपूर्वक उपभोग भी करेंगी। आप एक उच्च कोटि की विदुषी भी होंगी एवं नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक ड़ान प्राप्त करेंगी। साथ ही आप एक चतुर महिला भी होंगी। आप में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आप की वाणी साहसिक तथा ओजस्वी रहेगी अतः अन्य सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे इसके साथ ही आप प्रायः भय से भी त्रस्त रहेंगी एवं इससे व्याकुल भी रहेंगी। लेकिन समाज में अन्य जनों से आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही मधुर एवं स्नेहशील रहेंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।
जातक परिजातः

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरूष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

आप एक उच्च कोटि की वक्ता होंगी एवं अपने ओजस्वी वक्तव्यों से समाज के सभी वर्गो को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगी तथा उनके मध्य लोकप्रिय भी रहेंगी। आपको जीवन में आवश्यक सुखसंसाधन उपलब्ध रहेंगे एवं आनन्द पूर्वक आप इनका उपभोग भी करेंगी। साथ ही आप परिवार से भी युक्त रहेंगी लेकिन आपको नींद अधिक मात्रा में आएगी अतः कभी कभी आप में आलस के भाव की प्रवलता हो जाएगी जिससे आप किसी भी कार्य को करने में असमर्थ रहेंगी या आप प्रमादवश किसी कार्य को करने की इच्छा नहीं रहेंगी।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

मीन राशि में जन्म होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा। आपका ललाट विस्तृत तथा नाक ऊंची रहेगी। आपकी आखें भी अत्यन्त ही सुन्दर होगी एवं उनमें पूर्ण आकर्षण भी विद्यमान रहेगा। आपके शरीर के सभी अंग सुडौल एवं पुष्टता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली रहेगी। शिल्प या चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक इसमें आप सफलता तथा ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। आपके शत्रु हमेशा आपसे भयभीत रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आप हमेशा सफल रहेंगी। आप विविध प्रकार के शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगी एवं समाज में एक विदुषी के रूप में आपकी

ख्याति रहेगी। साथ ही संगीत शास्त्र के प्रति भी आप की नैसर्गिक रूचि रहेगी। आप धार्मिक कृत्यों का नियम पूर्वक पालन करने के लिए भी सर्वदा तत्पर रहेंगी। पुरूष वर्ग में भी आप लोकप्रिय एवं आदरणीय रहेंगी। आप अपने सम्भाषण में मधुर वाणी का भी उपयोग करेंगी तथा जीवन में सम्पूर्ण सुख संसाधनों से युक्त रहकर सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। क्रोध का भाव आप में अल्प रूप में ही रहेगा जिसका यदा कदा आप प्रदर्शन करती रहेंगी। आप राजकीय सेवा को भी प्राप्त करेंगी तथा खान से उत्पन्न द्रव्यों से आप आजीविकार्जन तथा धन लाभ अर्जित करेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपके वश में रहेंगे एवं आपके कथनानुसार ही आवश्यक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव सुन्दर एवं मैत्रीपूर्ण रहेगा अतः सभी लोगों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे। आप समुद्री जहाज या नाव आदि की सैर करने में भी रूचि रखेंगी तथा इससे प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा जीवन में यथाशक्ति इस प्रवृति का अनुपालन भी करती रहेंगी।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जल या समुद्र में पाए जाने वाले मोती, शंख तथा अन्य रत्नों से धनार्जन करने में भी सक्षम रहेंगी। इसके साथ ही आपको जीवन में किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र की धन सम्पत्ति भी प्राप्त होगी एवं सुखपूर्वक आप इसका उपभोग करेंगी। सुन्दर वस्त्रों को पहनने की आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी एवं इसको प्राप्त करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी शारीरिक कद की ऊँचाई भी मध्यम रहेगी।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप जल पीने की बार बार इच्छा प्रदर्शित करती रहेंगी। आपका अपने पति के प्रति पूर्ण आदर तथा विश्वास रहेगा एवं उनसे आप पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी। आप में उच्च कोटि के विदुषियों के गुण भी विद्यमान रहेंगे। साथ ही आप अन्य जनों के उपकार को स्वीकार करेंगी एवं उनके प्रति हार्दिक कृतड़ता का भाव प्रकट करेंगी। अतः अन्य लोग आपके सद्गुणों से प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित आदर सत्कार प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी एवं जीवन में कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भाग्यबल से ही सफलता अर्जित करेंगी।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।

फलदीपिका

आप इन्द्रियों पर नियंत्रण करने में पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगी तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। इसके अतिरिक्त कई प्रकार के अच्छे गुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी एवं उनका पालन करने में भी तत्पर रहेंगी। आप एक चतुर तथा बुद्धिमान महिला होंगी एवं अपने सभी महत्वपूर्ण कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही जलक्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही आनन्द की अनुभूति प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि सरल एवं स्वच्छ रहेगी एवं इसमें छल या प्रपंच का सर्वथा अभाव रहेगा।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप हमेशा उदर भरण के कार्यों में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी एवं कभी कभी आपके लाभमार्गो में भी रूकावट आएगी जिसमें आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपकी शारीरिक कान्ति अत्यन्त ही दर्शनीय रहेगी अतः इससे आपके सौन्दर्य एवं आकर्षण में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। पिता से प्राप्त धन से आप युक्त रहेंगी एवं प्रसन्नतापूर्वक इसका अपने जीवन काल में उपभोग भी करेंगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसिक एवं शौर्य युक्त कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में सन्तुष्टि का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं जो कुछ भी आप के पास उपलब्ध हो उसी पर सन्तोष करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप गम्भीर प्रवृति की महिला होंगी तथा शौर्यादि गुणों से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। आपका समाज के कभी वर्गों में पूर्ण प्रभुत्व भी स्थापित रहेगा एवं सभी लोग आपको गणमान्य समझकर आपका सम्मान करेंगे। लेकिन आप में कंजूसी का भाव भी रहेगा। अतः धन संचय के प्रति आपकी विशेष रूप से प्रवृति रहेगी। आप एक गुणवती महिला होंगी एवं अपने कुल या परिवार में प्रिय एवं श्रेष्ठ समझी जाएंगी। साथ ही सेवा कार्यों में भी आपकी अभिरूचि रहेगी तथा नित्य सेवा कार्यों के लिए तत्पर एवं उद्यत रहेंगी। आपकी गमन गति तीव्र रहेगी एवं आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग से आप पूर्ण स्नेह तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।

नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

आप अत्यन्त ही आकर्षक व्यक्तित्व की महिला होंगी तथा विभिन्न प्रकार के शास्त्रों में पांरगत रहेंगी।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति से युक्त महिला रहेंगी एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। लेकिन कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी आप के मन में दया का भाव भी रहेगा एवं दीन दुखियों के प्रति आप अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का भी पालन करती रहेंगी। आप में शारीरिक बल पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा तथा आपके अधिकांश कार्य स्वभुजबल से ही सम्पन्न होंगे। आप कई प्रकार की कलाओं तथा कार्यों को करने में भी निपुण रहेंगी एवं समाज में पूर्ण रूप से आदरणीय रहेंगी। साथ ही आपकी शारीरिक कान्ति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी इसके अतिरिक्त आप परिवार के साथ ही अन्य कई व्यक्तियों को भी सुख प्रदान करने वाली होंगी।

आप समाज में सर्वदा आदरणीया एवं सम्माननीया रहेंगी तथा धनैश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। आपकी आखें बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी एवं इसमें विशेष योग्यता तथा यश भी प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज के सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आप पूर्ण रूप से धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी एवं सदैव धार्मिक प्रवृतियों का नियमपूर्वक अनुपालन करती रहेंगी। आप सत्कार्यों को करने के लिए हमेशा रूचिशील रहेगी एवं प्रयत्नपूर्वक इनको सम्पन्न करेंगी जिससे अन्य लोग भी आपके कार्यों से लाभान्वित होंगे। आप एक सत्वगुण सम्पन्न महिला होंगी एवं इनके अनुपालन में सर्वदा तत्पर रहेंगी एवं समाज में पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त परिवारिक समृद्धि तथा उन्नति के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी एवं इसकी

उन्नति में आप का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा जिससे सभी परिवारिक जन आपको विशिष्ट सम्मान प्रदान करेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, हल्दी, पीत चन्दन, चने की दाल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं अन्यत्र सर्वप्रकार से शुभ फलों की वृद्धि होकर लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।